B.A. Hons. VI Semester, Political Science,

System Analysis: David Easton

Dr. Uma Sharma.

System Analysis : David Easton

व्यवस्था विश्लेषण : डेविड ईस्टन

परिचय (Introduction)—तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम में व्यवस्था विश्लेषण या प्रणाली विश्लेषण का विशेष महत्त्व है। इस संकल्पना का **लुडविग वौन बर्टलेनफी** (Ludwig Von Bertallanfy) नामक जीव-विज्ञान शास्त्री ने 1920 के दशक में प्रकाशित अपनी रचनाओं में इस अवधारणा के जीवशास्त्र में प्रयोग करने की बात कही और तभी से यह विचार सभी शास्त्रों में फैलता गया किन्तु इस अवधारणा का समाज विज्ञानों में व्यापक प्रयोग दूसरे विश्व युद्ध के पश्चात् ही शुरू हुआ। 1953 में डेविड ईस्टन ने अपनी पुस्तक 'Political System—An enquiry into the State of Political Science' में ऐसा सिद्धान्त निर्माण करने की धारणा व्यक्त की जिसमें सभी सामाजिक विज्ञान समा जायें। उसका तर्क था कि सम्पूर्ण राजनीतिक प्रक्रिया को सिद्धान्त का विषय बनना चाहिए, उसके कुछ पक्षों को नहीं।

1956 में अमरीका में सामान्य व्यवस्थामूलक अनुसंधान की प्रगति के लिए एक संघ (Society for the Advancement of the General Systems Research) की स्थापना की। इसके तत्त्वाधान में प्रकाशित वार्षिक ग्रन्थों में सामान्य व्यवस्थामूलक सिद्धान्त का प्रारम्भ एक फैशन बन गया। **ओ.आर. यंग** के शब्दों में, "इस प्रकार के दिक् विन्यास से जिन लोगों की इस आन्दोलन में रुचि हुई उनके लिए यह स्वाभाविक हो गया कि वे उन संकल्पनाओं की तलाश शुरू करें और विभिन्न विषयों में किये जा रहे अध्ययनों को एकता और संगठन प्रदान करें तथा अलग-अलग विषयों से प्राप्त अन्तः दृष्टिकोण और सैद्धान्तिक प्रगति को व्यापक रूप में उपलब्ध करें। इस खोज में उन्होंने जिस मूल और मार्गदर्शक विचार का विकास किया वह भी व्यवस्थाओं की संकल्पना 'Concept of Systems' जो तभी से सामान्य व्यवस्थामूलक सिद्धान्त की बुनियादी संकल्पनात्मक परिसम्पत्ति बन गई।"

राजनीतिक व्यवस्था का अर्थ और परिभाषा

[MEANING AND DEFINITION OF POLITICAL SYSTEM]

राजनीतिक व्यवस्था में दो शब्द राजनीतिक और व्यवस्था है। राजनीतिक शब्द सत्ता अथवा शक्ति का सूचक है। कोई भी संघ या समुदाय राजनीतिक तभी कहलाता है जब वह सम्प्रभु राज्यों का अंग होता है और उसकी आज्ञा के पालन के पीछे सम्प्रभुता की शक्ति होती है। व्यवस्था शब्द का प्रयोग अन्तर्क्रियाओं (Interactions) के समूह का संकेत करने के लिए किया जाता है। **Oxford शब्दकोष** के अनुसार, "व्यवस्था एक मिश्रित संकलन है, सम्बद्ध वस्तुओं अथवा अंशों का समूह है, भौतिक या अभौतिक वस्तुओं में संगठित समूह है।" (A system is a complex whole, a set of connected things or parts, organised body of material or immaterial things) व्यवस्था में एकता, नियमितता, सम्पूर्णता, संगठन, सम्बद्धता (coherence), संयुक्ता (Connection) तथा अंशों अथवा भागों की अन्योन्याश्रियता (inter-dependence of parts) पायी जाती है। इस प्रकार राजनीतिक व्यवस्था का अर्थ उन अन्योन्याश्रित

संबंधों के समूह को कहा जा सकता है जिसके संचालन में सत्ता एवं शक्ति का हाथ है | राजनीतिक व्यवस्था की कुछ परिभाषाएं निम्नलिखित हैं :-

डेविड ईस्टन के शब्दों में, "राजनीतिक प्रणाली अंतः क्रियाओं का समूह है जिसे सामाजिक व्यवहार की समग्रता में से निकाला गया है तथा जिसके द्वारा समाज के लिए सत्तात्मक मूल्य आवंटित किए जाते हैं |"

David Easton, "political system is a set of interactions as obstracted from the totality of social behavior through which authoritative values are allocated for a society."

आमण्ड और पावेल के शब्दों में, " जब हम राजनीतिक प्रणाली की बात करते हैं तो हम उन समस्त अंतः क्रियाओं को शामिल कर लेते हैं, जो वैध बल प्रयोग को प्रभावित करती है |"

Almond and Powell, "When we speak all political system we include all interactions which affect the use of threat the use of legitimate coercian."

रॉबर्ट ए. डहल के अनुसार, "राजनीतिक प्रणाली मानवीय संबंधों का वह दृढ़ मान है जिनमें पर्याप्त मात्रा में शक्ति, शासन, सत्ता सम्मिलित हो |"

Robert A. Dahl, "A political system is any persistent pattern of human Relationships that involves to significant extent power, rule or authority,"

लासवेल और काप्लान के शब्दों में, "राजनीतिक व्यवस्था गंभीर वचना है जो राजनीतिक व्यवस्था को अन्य व्यवस्थाओं से अलग करती है|"

डयूश के शब्दों में, "राजनीतिक व्यवस्था अधिकांश समन्वित आकांक्षाओं के ढांचे पर आधारित है|"

Deutesh, "Political system depends to a large extent on the fabric of co-ordinated expectations."

राजनीतिक व्यवस्था की उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि राजनीतिक व्यवस्था एक ऐसी उप-व्यवस्था है जिसके विभिन्न भागों में ऐसी संबंध सूत्रता होती है की व्यवस्था के किसी भी भाग में हुआ कोई भी परिवर्तन अन्य अंतः क्रियाशील अंगों तथा संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था में भी अनुकूल परिवर्तन ला देता है|

Features of Political Systems

राजनीतिक व्यवस्था की विशेषताएं

रॉबर्ट ए. डहल ने राजनीतिक व्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन किया है। उसके शब्दों में, "ये विशेषताएँ जो अधिकांश व्यवस्था की परिभाषा नहीं है, वरन ये वे नियमित विशेषताएँ हैं जो अधिकांश राजनीतिक व्यवस्थाओं में प्राप्त होती हैं।" ये विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) राजनीतिक स्रोतों का असमान नियन्त्रण (Uneven Control of Political Resources)—राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक स्रोतों को असमान रूप से बाँटा जा सकता है। राजनीतिक स्रोत के माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे को प्रभावित करने का प्रयास करता है। राजनीतिक स्रोतों में धन, भोजन, शक्ति की धमकी, मित्रता, मताधिकार, कानून बनाने का अधिकार आदि शामिल होते हैं। राजनीतिक स्रोतों के असमान वितरण के निम्नलिखितत कारण होते हैं—

(क) **पहले**, प्रत्येक समाज में और विशेषकर विकसित समाजों में कार्यों का विशिष्टीकरण बहुत अधिक होता है। विशिष्टीकरण के कारण सभी व्यक्ति राजनीतिक स्रोतों को समान रूप से प्राप्त नहीं कर पाते। उदाहरणार्थ—एक राजनीतिक व्यवस्था में विदेश मन्त्री को साधारण नागरिकों की अपेक्षा विदेश सम्बन्धी मामलों के सम्बन्ध में कहीं अधिक जानकारी होती है।

(ख) **दूसरे**, नागरिकों के भौगोलिक मतभेदों के कारण सभी व्यक्तियों की राजनीतिक स्रोतों पर समान पहुँच नहीं हो सकती।

(ग) **तीसरे**, समाज में व्यक्तियों के लक्ष्यों में अन्तर पाये जाते हैं। सभी व्यक्ति राजनीति में भाग लेने की इच्छा नहीं रखते और न ही प्रत्येक व्यक्ति में नेता बनने की योग्यता होती है।

(घ) **चौथे**, उद्देश्यों और पहल करने की शक्ति के अन्तर के कारण कुछ व्यक्तियों को विभिन्न विषयों का विशेषज्ञ बनाया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप युद्धप्रिय व्यक्तियों को दूसरे लोगों की अपेक्षा सैनिक शक्तियाँ दी जानी समुचित हैं।

(2) राजनीतिक प्रभाव की खोज (The Quest for Political Influence)—प्रायः प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो सरकारी नीतियों, नियमों और निर्णयों को प्रभावित करने के इच्छुक होते हैं। व्यक्ति सरकार पर अपना प्रभाव डालकर अपने लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। इसलिए प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति प्रशासकीय शक्ति प्राप्त करने का यत्न करते रहते हैं।

(3) राजनीतिक प्रभाव का असमान वितरण (Unequal Distribution of Political Influence)—राजनीतिक व्यवस्था में वयस्क सदस्यों के बीच राजनीतिक प्रभाव समान रूप से विभाजित नहीं होता। जो व्यक्ति राजनीतिक स्रोत अधिक रखते हैं, वे अन्य व्यक्तियों को प्रभावित करने की क्षमता अधिक रखते हैं। राजनीतिक प्रभाव का असमान वितरण आधुनिक युग की देन न होकर प्राचीन काल की देन है। राजनीतिक स्रोतों के विवरण की असमानता व्यक्तियों की कुशलता तथा लक्ष्यों में अन्तर तथा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोग किये जाने वाले साधनों की विभिन्नता आदि के कारण राजनीतिक प्रभाव के असमान वितरण के लिए जिम्मेवार होते हैं।

(4) संघर्षपूर्ण उद्देश्यों का समाधान (Resolution of Conflicting Aims)—एक राजनीतिक व्यवस्था के व्यक्तियों में प्राय: संघर्षपूर्ण उद्देश्य पाये जाते हैं, जिन पर सरकार प्राय: विचार करती है, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि सरकार व्यक्तियों के संघर्षपूर्ण उद्देश्य तथा कार्यों में सदैव हस्तक्षेप करे। शक्ति के प्रयोग से पहले आम वार्तालाप करने, भय आदि द्वारा व्यक्तिगत असहमतियों को सुलझाने के लिए व्यक्तिगत प्रयास किये जाते हैं, जब शक्ति के प्रयोग की आवश्यकता अनिवार्य बन जाती है, तब राज्य हस्तक्षेप करता है। उदाहरणस्वरूप मालिकों और श्रमिकों के झगड़े में सरकार तभी हाथ डालती है, जब उस झगड़े से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को खतरा उत्पन्न हो जाये।

(5) औचित्यपूर्णता की प्राप्ति (The Acquisition of Legitimacy)—राजनीतिक व्यवस्था में संघर्षों को हल करते समय नेता इस बात का ध्यान रखते हैं कि उनके साधनों का आधार भय, हिंसा आदि न होकर नैतिक होना चाहिए। अर्थात् सरकारी साधनों का आधार औचित्यपूर्ण होना चाहिए। ऐसा प्राय: देखने में आता है कि प्रत्येक व्यवस्था में नेता अपने कार्यों को औचित्यपूर्ण सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। यद्यपि सभी प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाओं में औचित्य की प्राप्ति का खेल खेला जाता है, तथापि प्रजातन्त्र में इसका महत्त्व अधिक होता है। इसका कारण यह है कि प्रजातन्त्र में जनता की इच्छा के अनुसार शासन चलाया जाता है।

(6) विचारधारा का विकास (Development of an Ideology)—राजनीतिक व्यवस्था में नेतागण अपनी सत्ता को औचित्यपूर्ण सिद्ध करने के लिए किसी न किसी विचारधारा का विकास अवश्य करते हैं। यह विचारधारा समाजवादी लोकतन्त्रात्मक या अन्य किसी प्रकार की हो सकती है, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि शासन की विचारधारा राजनीतिक व्यवस्था के प्रत्येक व्यक्ति को पता हो।

(7) अन्य राजनीतिक व्यवस्थाओं का प्रभाव (Influence of Other Political Systems)—राजनीतिक व्यवस्था का अन्य राजनीतिक व्यवस्थाओं पर प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक देश को अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों, समझौतों को ध्यान में रखकर अपनी राजनीतिक व्यवस्था का संचालन करना पड़ता है। आधुनिक युग में कोई भी राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से अपना अलग अस्तित्व नहीं रख सकती।

(8) परिवर्तन का प्रभाव (Influence of Change)—कोई भी राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से स्थिर नहीं होती अर्थात् प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था परिवर्तनशील होती है। परिस्थितियों और समय के अनुसार राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन होते रहते हैं।

राजनीतिक व्यवस्थाओं का विश्लेषण करते समय उपरोक्त बातों को ध्यान में रखना पड़ता है। राजनीतिक व्यवस्थाओं की विशेषताओं, उनके कार्यों या साम्यवाद से उनकी संरचनाओं आदि की तुलनाओं द्वारा व्यवस्था विश्लेषण का मार्ग प्रशस्त किया जाता है।

डेविड ईस्टन का इनपुट - आउटपुट विश्लेषण

(The input-output analysis of David Easton)

राजनीति शास्त्र में व्यवस्था उपागम का प्रथम महत्त्वपूर्ण प्रस्तुतीकरण डेविड ईस्टन द्वारा किया गया ।[1] ईस्टन का मौलिक योगदान यह था कि उसने राजनीतिक व्यवस्था की मान्यताओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए व्यवस्था सिद्धान्त को रूपान्तरित किया । ईस्टन को राजनीति शास्त्र का टॉलकॉट पारसन्स कहा जाता है । वह टॉलकॉट पारसन्स की भाँति व्यवस्थाओं के स्थायित्व, सुव्यवस्था एवं सतत्ता से सम्बन्धित है । ईस्टन ने अपने प्रथम मॉडल में एक व्यवस्था और उसके वातावरण के मध्य स्थित सम्बन्धों का चित्र अंकित किया है जो निम्नाँकित रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है—

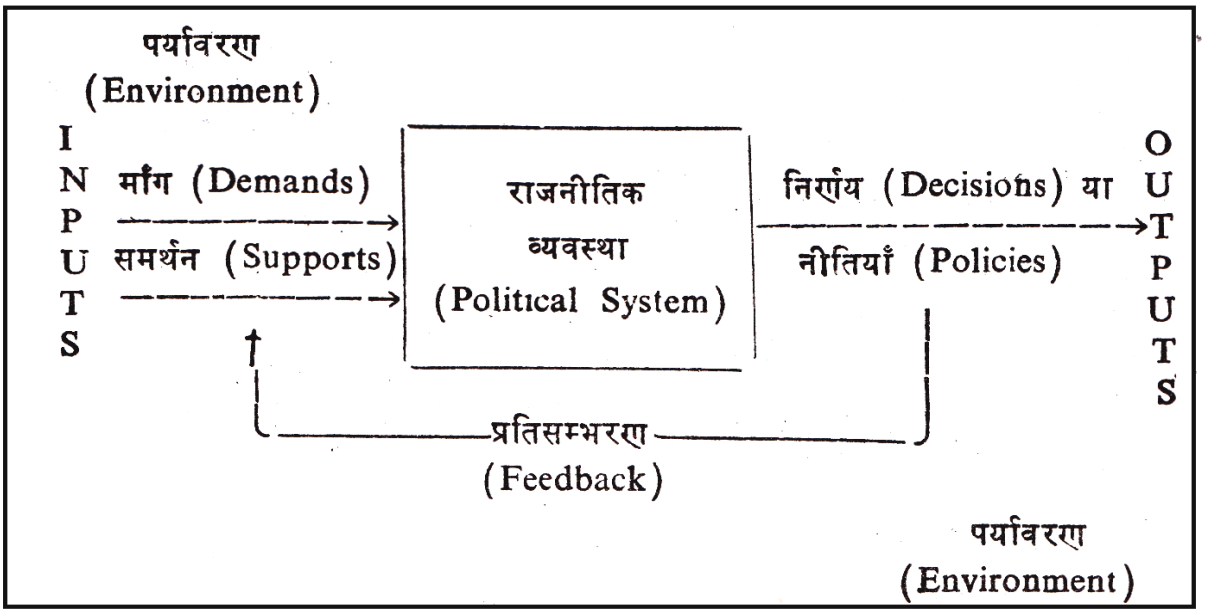

ईस्टन ने राजनीति एवं सामाजिक जीवन के अन्य पहलुओं के बीच स्थित सीमाओं पर ध्यान दिया और यह माना कि व्यवस्था तथा वातावरण के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है । एक व्यवस्था की इकाइयों के मध्य स्थित अन्तर्सम्बन्धों से उसकी सीमाएँ बनती हैं । ईस्टन ने व्यवस्था को अपने विश्लेषण की आधारभूत इकाई माना है । उसके मतानुसार उपागम सभी विज्ञानों की मूलभूत एकता का आधार है । वह व्यवस्था अवधारणा द्वारा राजनीति शास्त्र को क्रमबद्ध करके उसे सम्बद्धता एवं दिशा प्रदान करने की चेष्टा करता है । एक व्यवहारवादी होते हुए भी संरचनात्मक कार्यात्मक उपागम की आलोचना करता है । इसको उत्तर-व्यवहारवादी क्रान्ति का जनक माना जाता है । ईस्टन के व्यवस्था सम्बन्धी विचारों को संक्षेप में अग्राँकित प्रकार से वर्णित किया जा सकता है—

निवेश प्रकार्य (Inputs)—निवेश से तात्पर्य '**मांग**' तथा **समर्थन** से है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था के सामने पर्यावरण से कुछ **मांगें'** रखी जाती हैं। इन मांगों के पीछे मांग रखने वालों का 'समर्थन' होता है जो राजनीतिक व्यवस्था में निर्णय लेने वालों का ध्यान उन मांगों की ओर आकर्षित करता है। इसके साथ ही साथ '**समर्थन**' राजनीतिक व्यवस्था को विभिन्न प्रकार की मांगों से निपटने की शक्ति भी प्रदान करता है क्योंकि राजनीतिक व्यवस्था का अस्तित्व इस बात पर निर्भर करता है कि उसे जनता का कितना समर्थन प्राप्त है। यह समर्थन उसकी मांगों की पूर्ति की क्षमता पर निर्भर करता है। मांगें हमें यह समझने में सहायता करती हैं कि किस तरह पर्यावरण सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था पर अपना प्रभाव डालता है क्योंकि मांगों का जन्म सामाजिक पर्यावरण में होता है। मांगों की वैधता, व्यवस्था की क्षमता तथा स्थायित्व को समझने में समर्थन-सहायता करती है।

मांगें (Demands)—मांग मन की अभिव्यक्ति है जिसके द्वारा किसी वस्तु विशेष के प्राधिकारिक आबंटन (Allocation) के लिए, उन लोगों से जो कि इसको करने के लिए उत्तरदायी हैं, कहा जाता है कि ऐसा होना चाहिए या नहीं होना चाहिए। मांगें कई प्रकार की हो सकती हैं—संकीर्ण, विशिष्ट तथा सामान्य। उनको व्यक्त करने वाले लोगों तथा उनके उद्देश्यों पर यह निर्भर करता है।

मांगों की अपनी एक निर्दिष्ट दिशा होती है। उनका बहाव सदैव सत्ता की ओर होता है। मांगों के दो रूप होते हैं—सुझाव तथा निर्देश। मांगें दो प्रकार की होती हैं—स्पष्ट तथा अस्पष्ट। मांगें वैयक्तिक स्वार्थ तथा जनहित दोनों से सम्बन्धित हो सकती हैं।

समर्थन (Support)—राजनीतिक व्यवस्था कुछ कार्य करती है। कार्य करने के लिए समर्थन का होना बहुत ही आवश्यक है। समर्थन एक महत्वपूर्ण निवेश है जिसके होने या न होने से महत्वपूर्ण परिणाम निकलते हैं। बिना समर्थन के मांगों का कोई औचित्य ही नहीं रह जाता है। यह एक ऐसा बल है जो अधिकारियों का ध्यान मांगों की ओर आकर्षित करता है। समर्थन एक ऐसी कड़ी है जो राजनीतिक व्यवस्था को पर्यावरण से जोड़ती है। यदि अधिकारियों को व्यवस्था में समर्थन प्राप्त नहीं है तो 'मांगों' का निवेश के रूप में विधायन करना सम्भव नहीं हो पायेगा। बिना समर्थन के शासन में स्थिरता नहीं आ पाती। सामाजिक एकता बनाये रखने के लिए समर्थन आवश्यक है।

निर्गत प्रकार्य (Outputs)—निर्गत वे उत्पादित वस्तुएं हैं जो निवेश के रूपान्तरण के बाद प्राप्त होती हैं। निवेश को समर्थन द्वारा सूत्रबद्ध करके व्यवस्था के सामने निर्णय लेने के लिए रखा जाता है। राजनीतिक व्यवस्था विभिन्न प्रकार के निवेशों पर निर्णय लेती है। निर्गत व्यक्तियों द्वारा रखी गयी मांगों पर राजनीतिक व्यवस्था का निर्णय है।

पुनर्निवेशन (Feedback)—निर्गत का उद्देश्य सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। व्यवस्था के निर्गत से सदस्यों की आवश्यकताएं पूरी हुई या नहीं, जनता की इस सम्बन्ध में क्या प्रतिक्रिया है, इस सम्बन्ध में जो सूचनाएं अधिकारीगणों के पास आती हैं उसे 'पुनर्निवेशन' कहते हैं।

राजनीतिक व्यवस्था के भीतर सम्पादित होने वाले सभी कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य '**पुनर्निवेशन चक्र'** (Feedback loop) का है, क्योंकि इसके द्वारा सम्पादित कार्य की प्रक्रिया से राजनीतिक कार्यों का चक्र संचालित होता है।

पर्यावरण (Environment)—राजनीतिक व्यवस्था सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में अन्य उप-व्यवस्थाओं (आर्थिक, धार्मिक) की तरह एक उप-व्यवस्था की भूमिका अदा करती है। इसके पर्यावरण से आंशिक रूप से इसकी सहयोगिनी उपव्यवस्थाओं का बोध होता है जिन्हें आन्तरिक सामाजिक पर्यावरण (inter-societal environments) की संज्ञा दी गयी है। आन्तरिक सामाजिक पर्यावरण को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजनीतिक व्यवस्था वातावरण (Ecology), जैविक तत्व तथा समाज की पद्धतियों द्वारा प्रभावित होती है।

समीक्षा (Critical Appraisal)—डेविड ईस्टन के सामान्य व्यवस्था सिद्धान्त या निवेश-निर्गत विश्लेषण (Input-output Analysis) में संरचनात्मक कार्यात्मक विश्लेषण की भांति व्यापकता होने के बावजूद इस पर अगतिशीलता का आरोप नहीं लगाया जा सकता। ''इसकी प्रशंसा में यह कहा गया है कि यह एक गत्यात्मक विश्लेषण है और इसलिए व्यवस्था उपागम को यथास्थितिवादी अथवा संधारणात्मक होने के दोष से बचा लेता है।'' इस सिद्धान्त ने पुनर्निवेशन जैसी धारणाओं को शामिल कर अपने आपको गतिशील सिद्धान्त के रूप में पेश किया है। इसने किसी खास राजनीतिक व्यवस्था के साथ अपने को आबद्ध करने से बचाकर तुलनात्मक विश्लेषण को नयी अन्तर्दृष्टि प्रदान की है। डॉ. एस. पी. वर्मा के अनुसार ''ईस्टन का दृष्टिकोण किसी विशेष राजनीतिक व्यवस्था या सांस्कृतिक सन्दर्भ से बंधा हुआ नहीं है इसलिए प्रत्येक प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था के विश्लेषण में इसका प्रयोग किया जा सकता है।'' ईस्टन का उद्देश्य एक **सामान्य सिद्धान्त** (General Theory) की रचना करना था। इसमें वह कितना सफल रहा यह विवादपूर्ण है, किन्तु इसके व्यवस्था विश्लेषण से तीन बातें स्पष्टतः ज्ञात हो जाती हैं—(i) सम्बन्धित राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता, (ii) उसके जीवित बने रहने का रहस्य और (iii) उसके परिवर्तन की दिशा अथवा गति। अप्रत्यक्ष रूप से हमें उस स्थिति का भी बोध हो जाता है जब एक राजनीतिक व्यवस्था क्रान्ति के कगार पर खड़ी हो और विस्फोट की सम्भावनाएं यथार्थ बनने को आतुर हों। जब एक राजनीतिक व्यवस्था पर्यावरण से उत्पन्न मांग एवं समर्थन के दबावों के अनुकूल स्वयं को नहीं ढाल पाती तो क्रान्ति की सम्भावना बढ़ जाती है। ईस्टन की प्रशंसा में कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि उसने राजनीति विज्ञान को एक अनुशासन बनाने में उल्लेखनीय योगदान किया है। वह राजनीति विज्ञान में व्यवस्था विश्लेषण का जनक है।

आलोचकों की मान्यता है कि ईस्टन केवल द्वितीय स्तर के परिवर्तनों का ही विश्लेषण करता है, वह क्रान्तिकारी परिवर्तनों का विवेचन नहीं करता। ईस्टन के विश्लेषण की स्पष्टता और क्रमबद्धता भी एक दोष बनकर अव्यावहारिकता की जनक बन गई है। उसने पर्यावरण, प्रतिसम्भरण, समर्थन मांग, आउटपुट्स, आदि के बीच जो सम्बन्ध एवं गति उल्लेखित की है वह विचार के सार पर स्पष्ट तथा प्रभावशील प्रतीत होती है, किन्तु वास्तविक जगत में व्यावहारिक नहीं है। ईस्टन ने मानव व्यवहार के मूर्त प्रतिमानों पर विचार नहीं किया और इसलिए नियन्त्रण, शक्ति तथा प्रभाव का उसके विश्लेषण में स्थान नहीं है। उसने मतदान, नेतृत्व, आदि पर ध्यान नहीं दिया। ईस्टन जिस 'सामान्य सिद्धान्त' के निर्माण में प्रयत्नशील था उसमें वह सफल न हो सका। ईस्टन का विश्लेषण अमूर्त होने के कारण बुद्धिवाद के खतरों से दूषित है। वह यथास्थितिवाद के दोष से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सका है। उसने अपना विश्लेषण स्वनिर्मित अवधारणात्मक परिभाषाओं पर आश्रित किया है। फलतः उसका अवधारणात्मक विचारबन्ध (Conceptual framework) केवल एक अमूर्त संरचना बनकर रह गया है। आलोचकों के अनुसार यह आर्थिक दृष्टि से सन्देहपूर्ण, अवधारणात्मक आधार पर धुंधला और अनुभव की दृष्टि से प्रायः अनुपयोगी है।